अध्याय - 2

"हिरण्यगर्भा" कविताओं का सामान्य परिचय

अध्याय - 2

"हिरण्यगर्भा" कविताओं का सामान्य परिचय

प्रस्तावना :-

"हिरण्यगर्भा" की कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमियाजी ने अपनी कविता में जीवन के हर एक पहलू पर विचार करते हुए अपनी कविताओं का निर्माण किया है। इस काव्यसंग्रह में कवयित्री ने अपने व्यक्तिगत जीवन के विविध आयाम प्रस्तुत किये हैं।

"हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में कवयित्री की आत्मपीडा, विवशता, अतृप्तता अंतर्द्वन्द स्पष्ट हुआ है। उसके साथ-साथ उनकी कविताओं में नारी मन का अंतर्द्वन्द तो प्रमुख है ही, किन्तु उसके साथ एक विशेष वर्ग के जीवन परिवेश का भी अत्यन्त प्रामाणिक और प्रभावी चित्रण किया है। दिनेश नंदिनी डालमिया ने प्रेमजीवन को स्पष्ट किया, वैवाहिक जीवन की विडम्बना को प्रस्तुत किया, उसी तरह विरह वेदना, विफल प्रेम, नश्वरता का एहसास, घुटन, बंधमुक्ती का प्रयास, अपेक्षाभंग, संयोग का प्रतीकात्मक वर्णन, पश्चाताप आदि अनेक विषयों को अपने काव्य में स्थान देकर काव्यसंग्रह को सार्थक बनाने का सफल प्रयास किया है।

कवयित्री सामायिक समस्याओं और विवादों के झमेलें में न पडकर केवल अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति में ही निरत रहती है। कवयित्री का जीवन एक महान खोज में लीन है। प्रतिक्षण किसी अप्राप्य वस्तु में लीन रहकर वे अन्त में अपनी सफलताओं को सफलता में परिणत करत लेनी है। इसीलिए उनके गीत घोर निराशा की पृष्ठभूमिं में पनप कर भी आशा की अस्फुट रेखा से निखर पडे है। गीतों का आधार निश्चय ही लौकिक है, परन्तु कवयित्री की सतत काव्य साधना और गहन जीवन अनुभूति के कारण वह लौकिकता बहुत ऊंचे स्तर तक पहुँच

गई है और लौकिक अध्यात्मिकता का रूप धारण कर गई है। यही नंदिनीजी की कविताओं का सौन्दर्य है। कहीं-कही भाव रहस्य को छूने का यत्न करते है और दार्शनिकता के झमेले में पडने के पूर्व ही अपने सहज लौकिक स्तर पर लौट आते है, जिससे उनके स्वाभाविक माधुर्य की रक्षा हो जाती है।

इसी तरह उनके गीतों का साहित्यिक विश्लेषण देखने से समझ में आ जाता है कि कवयित्री में असीम दुःख सहने की क्षमता है। वे तिल-तिल जलते हुए दीपक की तरह जलते हुए जीवन से भागने का यत्न नहीं करती, वह उसी से अपना स्नेह सम्बन्ध स्थापित करती है -

2·1 आत्मपीडात्मक कवितायें :-

इस काव्यसंग्रह में कवयित्री ने अनेक जगह अपनी आत्मपीडा को प्रस्तुत किया है। कवयित्री कविताओं के माध्यम से कहना चाहती है कि हें भगवान । मुझे इस पीडा से मुक्त कर दो या मुझे "महावासनां का मंत्र" दो जो मुझे आत्मस्वीकृति के साहस से युक्त करनेवाला हो कवयित्री अपनी आत्मपीडा प्रस्तुत करते हुए कहती है -

"ओ क्षमापति ।
मुझे मुक्त करों
महावासना का मंत्र मुझे भी दो
मुझे भी आत्म-स्वीकृति के साहस से युक्त करो ।[1]

कवयित्री ने "उपवास की रात" इस कविता के माध्यम से अपनी आत्मपीडा प्रस्तुत करते हुए उनका उदासीनता का स्वर प्रकट हुआ है। कवयित्री को जैसे पहले से ही आभास था कि कोई पुरूष अतिथी बनकर आयेगा और उसे प्रेम की भीख मांगेगा - और उसके कारण ही कवयित्री को आत्मपीडा होगी, इस आत्म पीडा को प्रस्तुत करते हुए कवयित्री ने कहा है - जैसे -

"उपसाव की रात
ठिक तेरे जैसा पुरूष
द्वार पर अतिथी बन आयेगा

प्रणय निवेदन करेगा

ठीक वैसे ही ...."[2]

कवयित्री को जिसका डर था वही हुआ उसके जीवन में ऐसा एक पुरूष आया और उसके चुम्बन से कवयित्री के रोम-रोम में विष घोलता गया उसके कारण कवयित्री तडफ उठी कवयित्री की अवस्था एक शरभिध्द पक्षी की तरह हो गयी और उसके मुहँ से करूणा प्रकट होने लगी मगर इस करूणा को सूननेवाला उसे समझनेवाला कोई न था और इस करूणा के कारण ही कवयित्री की आत्मपीडा बढ़ती गयी। अपनी आत्मपीडा को "उपवास की रात" इस कविता में करूणा का स्वर देते हुए कवयित्री ने कहा है -

" उपवास की रात

अखण्ड लगन और विश्वास में भीगा

लथ-पथ

उसका दिव्य चुम्बन -

रोम-रोम में मादक विष घोलता

दंश बन जायेगा

ठीक वैसे ही ....।"[3]

"महाकाव्य पीडा" कविता में कवयित्री ने अपनी आत्मपीडा प्रस्फुटन करते हुए कहा है कि काल ने मुझे एक ऐसे महाकाव्य् के हाथों सौंपा दिया। उस महाकाव्य में मुझे पीडा के सिवा और कुछ स्थान नहीं था पीडा के कारण मैं हर समय व्यथीत थी, न मैं किसी का इंतजार कर सकती थी, न इन्तजार करानेवाला था। ऐसा मेरा जीवन भयावह बन गया था। समाज की रूढियों में मुझे ऐसे महाकाव्यों के हाथों सौंपा दिया। इस बात का कवयित्री को पता तक नहीं चला शायद यही उसका नसीब था।

"उस निर्जन मौन में

न था कोई

राह दिखाने को

अंध - श्रध्दा ने हाथ पकड

मुझे तुझ तक पहुँचा दिया ....।"[4]

2·2 आत्मचरित्रात्मक / आत्मानुभूति का कविताएँ :-

श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमियाजी के साहित्य में वैयक्तिक अनुभूतियों का ही चित्रण अधिक हुआ है, सामाजिक का नहीं। इसका स्पष्टीकरण देते हुए उन्होंने कहा भी है कि - "सामाजिक जीवन का मेरा अनुभव ही नहीं है तो मैं कैसे लिखती। बिना अनुभव के कुछ लिखना बेईमानी है। इसलिए सामाजिक जीवन पर लिखने की इच्छा ही नहीं हुई। मैं तो व्यक्तिगत ही लिखती हूँ और उसी को जग की अभिव्यक्ति समझती हूँ। बाहय जीवन की कठिनाइयों का मुझे अनुभव ही नहीं है और कल्पना मुझे आती नहीं, इसलिए व्यक्तिगत अनुभूति की व्यंजना ही मेरे साहित्य का प्राण है।"

"हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में भी श्रीमती डालमियाजी ने आत्मचरित्रात्मक, आत्मानुभूति की कविताएँ प्रस्तुत की है, इसमें उनका नीजी जीवन तथा स्वअनुभव दिखायी देता है। जीवन में उन पर जो प्रहार किये, जीवन की कडवाहट को पीकर उन्होंने अपना जीवन कैसे जिया यह बताने का यथासत्य प्रयत्न किया है।

मनुष्य जीवन में इच्छाओं का भार बढाता चलता है, परन्तु यह जरूरी नहीं की उसकी सभी इच्छाएँ पूर्ण हो वें निराशा में परिणत होती है । और धीरे-धीरे अज्ञात मन की धरोहर बनकर स्वप्न में अभिव्यक्त होकर असीम पीडा की सृष्टि करती है।

इसी प्रकार जब जीवन की आस्कतीयाँ स्वयं मृत्यु से अठखेलियाँ करने लगती है, और कब्र के फूलों से हार गुथँकर क्षणिक सुख में ही स्थायी सुख का अनुभव करती है। तब आत्मा के दर्द की तासीर का पता लगता है। कवयित्री के जीवन में शादी के बाद सुख के क्षण कुछही आयें नहीं। तो उसके जीवन में अन्धकार की ही छाया रही। इस अन्धकार की छाया को या जीवन में आये हुये घने बादल को कवयित्री ने आत्मचरित्रात्मक कविता का साथ लेकर और अनुभवात्मक कविताओं का सहारा लेकर अनेक कवितायें प्रस्तुत की हैं।

कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया ने अपना अनुभव व्यक्त करने के लिए "जलती पर्णकुटी में", "कुँवारी कन्या और शिव", "प्रेत बाधीत", "झूठ कहते-कहते···" इन कविताओं का सहारा लिया। इन कविताओं में कवयित्री ने आत्मचरित्रात्मक रूप से अपने व्यक्तिगत जीवन को प्रकट किया। इन कविताओं में कवयित्री ने अपने असीम दुःख को प्रस्तुत किया। कवयित्री तिल-तिल जलते हुये दिपक की तरह जलते हुए जीवन से भागने का यत्न नहीं करती उसी जीवन से अपना स्नेह सम्बन्ध स्थापित करती हैं।

कवयित्री ने "जलती पर्ण-कुटी में" अपने अनुभव को काव्य का रूप दिया है। कवयित्री कहती है कि "मेरा जीवन स्थिर जल की तरह है उसमें न लहरे दौडती है, न तरंग उठते है। हर समय मैं अपने आपको अकेली महसूस करती हूँ। हर समय मेरे आँखों से आसुओ की धारा बहती है। मैंने जब किसी का इन्तजार करना चाहा तब भी हर समय मेरी निराशा हुयी। मेरी इच्छाओं का हर समय गला घोटा गया इसी वजह से मुझे अपने जीवन से नफरत हो गयी। इस आत्मानुभव को स्पष्ट करते हुए कवयित्री ने कहा है -

" तब ।
इस पर्ण-कुटी में कातर
मैं अकेली ही घिर जाती
जलती हुई बाहर-भीतर
इन नयनों की वाणी
तब भी
समझ नहीं पाती ·····।"[12]

"कुँआरी कन्या और शिव" इस कविता में दिनेश नंदिनी डालमिया ने अपने अनुभव को इस तरह से स्पष्ट किया है कि, उसका जीवन अन्धेरी गुंफा में जलती हुयी अकेली मशाल की तरह हर समय उसने किसी का इन्तजार किया। जिसका उसे इन्तजार था, वह तो उसे नही मिला और इसी वजहसे ही उसका जीवन जैसे सूखे पत्ते की तरह बन गया।

नंदिनीजी का सांसारिक जीवन दर्दनाक रहा हैं, उसे अपने पति से हर समय दुःख ही मिला उसकी इच्छाओं की कभी पूर्ति नहीं हुयी। अपनी इच्छाओं का गला घोटकर अपने बूढे पती के साथ अपना जीवन बीताया। शादी के बाद वह अपना जीवन एकांकी में जीने का प्रयत्न करने लगे उसे अपने जीवन से नफरत हुयी। अपनी इस दयनिय अवस्था को आत्मानुभाव के माध्यम से व्यक्त करते हुए दिनेश नंदिनी जी ने लिखा है कि :-

"बूढे गगन में
जवान बिलजी की तरह
बार-बार काँपती
कुँआरी ही रह जाती है
भाव - देह से
शिवत्व
सह जाती है।"[6]

दिनेश नंदिनी डालमिया ने एक जगह अपना आत्मानुभव व्यक्त किया। "प्रेतबाधित" कविता के माध्यम से दिनेश नंदिनीजी ने अपने नीजी जीवन को स्पष्ट किया। उनका कहना है कि जब तुम मेरे जीवन में आये तो तुम्हारे आँखों में दिन का ढलाव था याने कि तुम्हारा जीवन अन्त की ओर जा रहा था और ऐसी अवस्था में तुमने मेरी जैसी कच्ची कन्या को क्यों अपनाया तुम्हारे कारण मेरा जीवन नश्वर बन गया है। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे जीवन को जैसे कि प्रेत कथाओं ने ही घेरा है। जब से तुम मेरे जीवन में आये तब से मैं अपने आप से नफरत करने लगी हूँ। स्वयं को स्वयं से अलग कर चुकी हूँ। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं मृत्यु की दहलीज पर खडी हूँ। ये सब सिर्फ तुम्हारी वजह से हो गया है। मैं एक चलती फिरती लाश बन गयी। यह सब सिर्फ तुम्हारी वजह से हो गया इस बात को करूणा के स्वर से प्रकट करते हुये कवयित्री ने कहा है

"तब से -
स्वयं को स्वयं से
अलग कर चुकी हूँ

महायात्रा के अंतिम आयाम पर
प्रेत बाधित
मृत्यु की देहरी पर रूकी हूँ।"[7]

"झूठ कहते कहते ......" कविता में कवयित्री ने अपने मन की बात व्यक्त की है। कवयित्री के रोने का भी अत्यंत पावन ढंग है। किसी प्राप्य वस्तु के लिये और प्रायश्चित स्वरूप रोना तो एक साधारण बात है, परन्तु अधर्म की मादकता और आशा से उलझे हुये सपनों की श्यामलता को धोने के लिये, तथा प्यार को प्राणों से तोलने के लिये अश्रुओं का प्रयोग अत्यंत सफलता से किया है। कवयित्री कहती है कि "झूठ कहते कहते ..." मैंने सच कहा और यही भूल मैंने की।

झूठ कहते कहते मैंने भूलकर सच कह दिया इस कविता में अपनी निजी जीवन की अतृप्ती, कुंठा को छुपानेवाली कवयित्री, लत प्रतिष्ठित समाज में अपने आपको सुस्थापित करने के लिये जो बार-बार झूठ बोलती है। इसी झूठ के बीच सत्य एक बार गलती से उद्घाटित होता है। तब वह कहती है कि झूठ को जो रंग सफेदी उसने की थी, उसके बीच से निकलने वाला उसके मनोअवस्था का परिचायक कवयित्री के अवचेतन में घुमटने वाले अधपके वासनाओं के कच्चे उद्गार भीगी हुयी गदरायी देह की अतृप्ती, और इसी अतृप्ती के कारण निर्माण होनेवाले अनैतिकता से भरे हुये पाप के घडे जिन्हे उसकी सद्सद विवेक बुध्दी कभी कभार ठिकरों में परिवर्तित कर देती है। इसका कारण वह जानती नहीं वह सोचती है कि शायद उसका नाम उस सर्व शक्तिमान के हजार नामों में से चुनकर लिया गया है। इसी कारण हजार बार प्रयुक्त होनेवाले झूठ के बीच वह गलती से सत्य को प्रकट करती है । -

"तुम्हारे
सहस्त्र नामों में से चुन कर
मैंने अपना
एक नाम रख लिया है।"[8]

13137

A

2·3 <u>विवशता :-</u>

दिनेश नंदिनी डालमिया ने अपनी कविता के माध्यम से अपनी विवशता व्यक्त कि है। कवयित्री का जरठ विवाह होने के कारण उनके जीवन में विवशता निर्माण हुयी। अपने बुढे पती के साथ जिंदगी बीताते समय कवयित्री का हृदय विवशता से भर उठा। इस विवशता को वाणी देने का प्रयत्न कवयित्री ने अपनी कविताओं के माध्यम से किया। कवयित्री ने समय के साथ चलने का प्रयास किया वह उसमें असफल रही जब कवयित्री के शादी हो जाती है, तो उसके जीवन का मध्यान्तर हो जाता है। बूढे पती के साथ जीवन बीताना कठिन होने के कारण उनकी विवशता बढ़ती हुयी नजर आती है, अपनी विवशता को "सलाखो - पूरे स्वर", "विषाद गीत" इन कविताओं के माध्यम से प्रकट किया।

"सलाखों-पूरे स्वर" कविता में दिनेश नंदिनी डालमियाजी ने अपनी विवशता प्रकट की है। वह कहती है कि शादी के बाद मेरा जीवन जैसे दर्द बन गया है। मैंने अपना जीवन सूकर बनाने का प्रयत्न किया पर मैं असफल रही। मेरी यह जीवन की विवशता की यात्रा सिर्फ चल रही है रूकने का नाम ही नहीं लेती। मेरा जीवन जैसे एक करूण गीत बन गया, इस करूण गीत की विवशता को प्रस्तुत करते हुए कवयित्री कहती हैं -

"अनंत यात्रा पर निकला पाखी
नये सुर सीखता सलाखों-पुरे
दर्दीले
आकाश को धरती से जोडता
गाता है
यों, सिर्फ दाना-पानी लेने आता है।..."[9]

इस प्रकार "विषाद गीत" कविता में कवयित्री की विवशता दिखायी देती है। इस कविता में कवयित्री कहती है - कि मैं एक अबला नारी होने के कारण मेरे आँखो से आँसु बार-बार ढलक पडते है, ये आँसु ही मेरा फासी का फंदा बन गये है। मैं खुली आँखो से अपना मृत्यु देख रही हूँ और मृत्यू की यातना भी

सह रही हूँ। परन्तु आज मेरी रुलाई किसी को दिखायी नहीं देती। मेरी चीख किसी को सुनायी नहीं देती। मेरा जीवन एक खण्डहर बन गया है, जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। मैं जीवित हूँ क्योंकि किसी ने मुझे फाँसी नही दी, और मेरा जीवन लम्बा होने के कारण मैं सिर्फ "विषादगीत" ही सुना रही हूँ।

दिनेश नंदिनी डालमियाजी ने "विषादगीत" इस कविता में अपनी विवशता इस प्रकार प्रस्तुत की है जो आँसु और मृत्यु के बीच खडी है। अपनी विवशता को वाणी देते हुये कवयित्री ने कहा है -

"इतनी साधारण
इतनी सामान्य रीति से
आयी मृत्यु खुली आँखो
कि असमान्य बन गयी मेरी यातना
रुलाई या चीखों की जगह
एक अट्टहास गूँज रहा है
खण्डहरों में ....।"[10]

2·4 विरह वेदना :-

दिनेश नंदिनी डालमियाजी ने "हिरण्यगर्भा" काव्य संग्रह में अपनी विरह वेदना को व्यक्त किया है। कवयित्री डालमियाजी का विरह दूसरें कवियों के तुलना में अलग प्रकार का है। उनका विरह अब रुला-रुलाकर जीवन को मृत्यु का अनुभव करानेवाला नहीं है, वह जीवन में इतना रम गया है कि अब वही जीवन का सुहाग प्रदीप बन गया हैं।

"आँखो में मचलती अलकनंदा" कविता में उन्होंने अपनी विरह को व्यक्त करते हुए कहा है कि तुम्हारा और मेरा नाता तो था ही परन्तु आज या कल तुम्हें अलग होना था, और तुम मुझसे अलग हो गये। जब तुम अलग हो गये तब मेरी अवस्था का मैं क्या वर्णन करूँ? मेरे शरीर पर तुमने जो निशान छोडे हैं और आज वह गन्ध बनकर खिल रहे हैं, उसका मैं क्या करूँ? उन्हें कहाँ टाँकूँ ? तुम्हारे अलग

होने से मेरे आँखो से जो आँसू बह रहे है उसे किस चट्टान पर उतारूँ, कि जिससे एक धारा बनकर बहें। तुम्हारे जाने से मेरा जीवन छिन्न विछिन्न हो गया जैसे जीने की तमन्ना ही खत्म हो गयी। इस प्रकार से कवयित्री ने अपना विरहता का दर्शन कराया हैं ।

"पर, मैं
उन हथेलियों का क्या करूँ
जिनपर तुम्हारे चुम्बनों के पलाश खिलें
शिवाओं तक पहुँचे
गंध बन खिले
उन्हें कहाँ टाँकू ?"[11]

2·5 विफल प्रेम :-

दिनेश नंदिनी डालमिया नें "मूर्ति और मूर्तिकार" कविता में अपनी विफलता को स्पष्ट किया है। कवयित्री अपने पुर्व प्रेम में और शादी के बाद के प्रेम में असफल रही। कवयित्री ने जिसको चाहा वह उसे नहीं मिला जो मिला उससे प्यार की अपेक्षा करना व्यर्थ। जैसे कवयित्री का प्रेम ही असफल रहा और उसका जीवन भी। इस प्रेम में कवयित्री की जीवन को एक अन्धेरी नगरी में ढकेल दिया। प्यार ही कवयित्री के जीवन का फासा बन गया। कवयित्री कहती है कि मैने मूर्तिकार के आने की प्रार्थना की और वह आया भी। उसने कवयित्री को फँसे से मुक्त करके जीवन का एक नया रास्ता दिखाया उसके चले जाने से कवयित्री उसका इन्तजार करती रहीं। परन्तु वह नहीं आया और उसके इन्तजार के कारण कवयित्री अपना नया रास्ता भूल गयी। मजबूरीवश उसने दूसरा रास्ता पकड लिया और वह अपना जीवन बनाने में रत रहने लगी। फिर भी उसका जीवन, जीवन नहीं बना। कवयित्री ने अपने मूर्तिकार को छोडकर न चाहते हुए भी आकाश में विहार करने लगी और उसकी प्राणप्रतिष्ठा में प्रतिक्षा रत खडा वह मूर्तिकार उसका इन्तजार कर रहा था। कवयित्री चाहकर भी उसे न मिल सकी, इस विफल प्रेम को प्रयुक्त करते हुए कवयित्री ने लिखा है -

"मेरे प्राण
कहीं ऊपर
आकाश में उडते - उडते
और धरती पर
नीचे,
मेरी प्राण-प्रतिष्ठा में प्रतीक्षा रत खडा
वह मूर्तिकार ....।"[12]

2·6 <u>अतृप्तता</u> :-

कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया नें "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह में अतृप्तता का स्वर जो प्रकट किया है, वे कविताएँ "रातभर", "रूदन के वर्णाक्षर", "ओ गंदवाही पवन" और "उफनते समुद्र तट पर" इन कविताओं के माध्यम से कवयित्री ने अपने आत्मा की जो अतृप्तताएँ, इच्छा की जो अपुर्णताएँ है, उसे वाणी देकर स्पष्ट किया। कवयित्री की आत्मा की पूर्ति कभी नहीं हुयी आत्मा के इस पीडन को, घुटन को, दर्द भरी व्यथा को कवयित्री ने "रातभर" इस कविता में इस प्रकार स्पष्ट किया। कवयित्री की अतृप्तता यह है कि वह अपने चेहरे पर मुस्कान ढूँढने का प्रयत्न करती है वह मुस्कान तो उसे नहीं मिलती परन्तु उस मुस्कान की जगह कवयित्री को आँसूओं के हार मिल जाते है। रातभर वह रोती हुयी नजर आती है। अपनी घुटन को उसने प्रकाश में बनाने का प्रयत्न किया परन्तु उस प्रयत्न में आसक्त रहने के कारण छटपटाती हुयी नजर आती है तब उसके अतृप्तता के स्वर निकल पडते हैं।

"रातभर
रूदन की कंदरा में मुस्काने ढूँढती
आँसुओं के हार बनाती रही
रातभर ....."।[13]

"अतृप्तता के करूण स्वर", "रूदन के वर्णाक्षर" कविता में इस प्रकार दिखायी देते है। कवयित्री कहती है कि मेरा अपना जीवन अतृप्तता से भरा हुआ

है। मेरी दुनिया डूबनेवाली नौका की तरह हैं। उसे बचानेवाला कोई नहीं है। मेरा यह करूण स्वर सिसकियों के माध्यम से चारों दिशा में गुंज रहा है। उसकी पुकार सुननेवाला कोई नहीं जिस प्रकार से अहिल्या ने सब दुःख दर्द सहकर वह पत्थर बन गयी है। उसी प्रकार मैं जीवित होकर भी अहिल्या जैसी पत्थर बन गयी, और मेरे नसीब ने ही मेरे साथ अन्याय किया। मेरा ऐसा जीवन मेरा हृदय अतृप्तता से भरा हुआ हैं।

"इन इबारत को
अपनी आँखों पढती मैं
किन्ही आदिम संकेतों तक पहुँच रही हूँ
और मेरी कोख की गुहा के मुहाने पर
अँन्धेर का दरिया
चिंघाड रहा है ......"[14]

कवयित्री दिनेश नंदिनीजी अपने अतृप्तता के बारे में कहती है कि मेरे कविताओं में मेरे अकेलेपन की अतृप्तता की अनुभूति इस सीमा तक है कि अनेक लागों के बीच में बैठे हुये भी मैं अपने में डूबी रहती हूँ। उसे एकान्त भी प्रिय नहीं है, अधिकतर लोगों से बातचीत करते हुये वह लिखना पसन्द करती है लिखते समय लोग पास बैठे रहते हैं। इसका कारण यह है कि लोगों के बैठे रहने पर भी मैं सोचती हूँ कि मैं अकेली हूँ। कवयित्री के व्यक्तित्व का यह विरोधाभास उनकी एक निजी विशेषता है और यह सब अतृप्तता का ही कारण है। अपनी अतृप्तता व्यक्त करते हुए कवयित्री ने "उफनते समुद्र तट पर" कविता का आधार लिया है। कवयित्री कहती है कि हर मनुष्य दूसरे को दुर से जानने का समझने का प्रयत्न करता है। उसके हृदय कि पीडा को जानने का प्रयत्न नहीं करता। उसी प्रकार से कवयित्री का जीवन हैं। कवयित्री ने प्रकृति का आधार लेकर अपनी अतृप्तता स्पष्ट की है। वह कहती है तुम मेरे लिये जितने पल व्यतीत करते हो उतना ही मैं स्वयं को खोजती हूँ। जब मैंने अपने जीवन को खोजने का प्रयत्न किया तो मेरे आँखोंसे आँसू छलक पडे। तुम्हारा हसना ही जैसे मेरा गीत बन गया था

और मेरी अतृप्ती के कारण मेरा लेटा हुआ शरीर भी नृत्य कर रहा था। मुझे किसीने जानने का प्रयत्न नहीं किया इस व्यथा को अतृप्तता का स्वर देते हुये कवयित्री ने कहा हैं -

"हम दृष्टि से ही
लाँघ जाते है भरे उफनते समुद्र ....
न समुद्र बीच उतरते हैं
न जल को छूते हैं
न नहाते हैं
न डूबते हैं।[15]

इस प्रकार वे अपने मन को सांत्वना देने का पूरा प्रयास करती है। लेकिन जब-जब हृदय की गहराईयों में दबी हुयी उनकी अतृप्त प्रेमभावना रह-रहकर उभर आती है तब वे बडी परेशान होती है और उनके अतृप्तता के स्वर इस प्रकार से बाहर पडते हैं।

2·7 <u>अन्तर्द्वन्द</u> :-

आधुनिक काल के नये युग की नई कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया कि कवितायें एक व्यक्ति के समस्या को प्रकट करनेवाली कविता हैं। ज्यादा से ज्यादा उनकी कवितायें उनके ही जीवन से बन्धी हुयी नजर आती है। "हिरण्यगर्भा" की कविताओं में कवयित्री ने जैसे अपना व्यक्तिगत जीवन ही प्रस्तुत किया है। अन्तर्द्वन्द यह उसमें से ही निर्माण होनेवाली एक कविता हैं।

कवयित्री ने अपने अन्तर्द्वन्द को "युध्द संदेश" कविता में स्थान दिया है। कवयित्री की हर एक इच्छा अधुरी रहने के कारण उनके मन में जो द्वन्द चलता है। उसे कविता में प्रकट किया है। कवयित्री जैसे कहना चाहती है कि मेरा जीवन जैसे तुम्हारे कारण ही अन्धकारमय बन गया है और अब मेरा मन ही मुझे युध्द करने के लिये कह रहा है। तुम बार-बार मुझे सुचना देने का प्रयत्न करती हो परन्तु मैं सुचना नही पनाह चाहती हूँ। तुम मुझे युध्द का सन्देश देकर

परेशान मत करो मैं तो अब युध्द के लिए ही तैयार हूँ। मेरे मन में अन्तर्द्वन्द चल रहा है। कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया ने अपने अन्तर्द्वन्द को अपनी आत्मा की वाणी से इस प्रकार व्यक्त किया हैं।

"मुझे सूचनाएँ नहीं
पनाह दे
युध्द से
युध्द की सूचनाओं से
यों
युध्द के सन्देश भेज
मुझे परेशान न कर ।"[16]

वैवाहिक जीवन की विडम्बनात्मक कविताएँ -

कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया का वैवाहिक जीवन सफल नहीं रहा। बूढे व्यक्ति के साथ शादी होने के कारण उनका जीवन-जीवन नहीं रहा। उनका जीवन जैसेस चार दिवारी में बन्द था अपने पती के प्रती उन्होंने जो इच्छाएँ व्यक्त की वह इच्छाएँ कभी पूरी नहीं हुयी। कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया का प्रेम तो असफल रहा परन्तु वैवाहिक जीवन भी सफल न हुआ। वह अपने जीवन से तंग आ गयी परन्तु उसे वैवाहिक जीवन से छुटकारा न मिला। दिनेश नंदिनी डालमिया का वैवाहिक जीवन विवाहपूर्व जीवन के एकदम विपरित था, पहले के जीवन में स्वच्छदता अधिक थी और वैभव कम, अब वैभव अधिक था और स्वच्छन्दता कम। विवाह के तुरन्त बाद देश-विदेश की एकाधिक यात्रा के उपरान्त उनके जीवन का अधिकांश घर की चारदिवारी में ही गुजरता था। उनका यह जीवन उनके विवाह पुर्व के संस्करण के एकान्ततहा प्रतिकुल था। न तो उनके विचार सेठजी से मेल खाते थे और न घरेलू वातावरण में ही उनका मन लगता था। सेठजी एक तो अपने कार्य में बहुत व्यस्त रहते थें, और दूसरे उन्हें अन्य पत्नीयों को भी समय देना पडता था। अतः इनके लिये उनके पास समय का अभाव रहता था। परिणामतः विवाह परान्त भी दिनेश नंदिनी डालमिया अपने को अकेला ही अनुभव करती थी।

"चिरसुहागन" इस कविता में कवयित्री ने अपने वैवाहिक जीवन की विडम्बना का चित्र खींचा है। "चिरसुहागन" इस कविता में कवयित्री अपनी कल्पनासे जीने का प्रयत्न करती है। परन्तु वह कल्पना, कल्पना ही रह जाती है। वह जितने ही जोर से ऊपर जाना चाहती है उतने ही जोर से वह धरती पर आकर गिर जाती है। उन्होंने अपने जीवन को बदलने का अनेक बार प्रयत्न किया, परन्तु उनका जीवन बदल न सका। ऐसे वैवाहिक जीवन की व्यथा को काव्यपंक्तियों में बाँधते हुये कवयित्री ने लिखा है -

"मेरे अहसासों के साये
डैने फैलाए उड़ान भरते ही
गिर पडते है फडफडाते ....."[17]

2·8 **बन्धमुक्ति का प्रयास :-**

मनुष्य जब जीवन से लड नही पाता, तब वह इस संसार से मुक्त होना चाहता है। कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया भी जब जीवन से लड नहीं पाती तब वह भी जीवन से मुक्त होना चाहती है। आजतक उन्होंने जीवन के जो अनेक पहुल देखे, उन्हें लगता है मेरी जो कहानी है वह सबसे निराली कहानी है। मैंने शान्ति चाहकर भी सिर्फ मुझे आग मिली। इस आग की ज्वाला का सामना करके मैं थक गयी। मैं अपना प्रेम भी छोडकर आयी। जो अपाहिज था। इसी वजह से वैवाहिक जीवन से पहला जीवन और वैवाहिक जीवन के बाद का जीवन, दोनों ने भी मुझे दुःख ही दिया। यह दुःख मेरे पिछे ऐसा पडा है कि मेरा पिछा छोडता ही नहीं। इसी कारण मैं इस जीवन से मुक्त होना चाहती हूँ। आगे कवयित्री कहती है कि, "मुझे मृत्यु के द्वारपर झुलना पसन्द है पर अब मुझे समझाने का प्रयत्न मत करो। अब मैं अपने प्यार से, जगाने से, तुर्क से, तुफान से, आग से, पानी से मुक्त होना चाहती हूँ। आजतक कवयित्री का एक दिन भी दुःख के बीना नहीं गुजरा इस दुःख से मृत्यु ही सिर्फ छुटकारा दे सकती है। ऐसी कवयित्री की धारणा हो गयी इसी कारण कवयित्री अपने प्यार के बन्धनों को तोडकर मौत को अपना कर एक शान्ती की नींद लेना चाहती है।

"एक नींद आग रहित" इस कविता में कवयित्री ने अपने जीवन की वेदना को स्पष्ट करते हुये कहा हैं -

"अपनी आँखो को
अपने ही रक्त से धोती
अपनी मिट्टी को
अपने हाथों से लगातार भिगोती
किन्तु आँचल में लगी आग है कि बुझती नही।"[18]

इसी प्रकार कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया ने "रक्त रंजित पल्लू" इस कविता में मुक्ति की चाह प्रस्तुत की है। इस कविता में कवयित्री का व्यक्तिगत जीवन दिखायी देता है। कवयित्री इस संसार से मुक्त होना चाहती है। इस जीवन में डरावनी आवाजों को सुनकर वह भयभीत और घायल हो गई हैं। अपने भुख को मिटाने का प्रयत्न करने के बावजूद असफल रही इस असफलता से वह निराश दिखायी देती है। और इस निराशमयी जीवन से अपने आप को मुक्त करने के लिये वह भाग जाना चाहती है। उसे ऐसा लगता है कि इस जीवन में इन्सानियत के नाते मदत करनेवाला कोई नहीं अब जीवन में कोई आशा भी नहीं रही क्योंकि हर एक आशा की निराशा हुयी। वह अपने कष्टमय जीवन के दंशों से अपने को बचाने का प्रयत्न करती है तब उसके हृदय से ऐसे बन्धों को तोडने की प्रेरणा जागृत होती हैं। और वह कहती हैं -

"जाने किस लिए
उन आदम खोर गुफाओं में
अपने प्राणों के रेशमी,
रक्त रंजित पल्लू को छुपाती
ढलान पर उतर रही है
रक्त गंधी फूलों को पीछे छोडती
उनके दंशों से अपने को बचाती।"[19]

2·9 अपेक्षाभंग :-

आधुनिक काल के नये युग की नई कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया का काव्य अनेक समस्याओं के साथ-साथ अपेक्षाभंग से भरा हुआ हैं। कवयित्री का जीवन असफल होने के कारण अपेक्षाभंग होना स्वाभाविक है। कवयित्री अपने जीवन को आनंदमय बनाने का प्रयत्न करने के बावजूद उसका जीवन दुःखमय हो गया। यह सब अपेक्षाभंग के कारण ही हुआ।

"मैने प्यार माँगा था" इस कविता में कवयित्री ने अपने अपेक्षाभंग को व्यक्त किया है। कवयित्री कहती है कि मैंने तुम्हे प्रेम माँगा था वह मुझे तुमसे नहीं मिला। तुमने प्रेम की जगह सिर्फ वेदना ही मुझे दी। तुम्हारे प्रेम में मैं तडपती रही। इसी कारण मैंने तुमसे सिर्फ अविरत अश्रु माँगे वह भी तुमने देने से इन्कार कर दिया। तुमने मुझसे हर एक बात छिनने का प्रयास किया फिर भी मैं तुमसे सिर्फ प्रेम माँगती रही। तुम्हारे रस प्रेम ने मेरी जीवन रूपी नौका डूबा दी। मुझे जिने से अलग कर दिया, अपनी अपेक्षाभंग की व्यथा "मैंने प्यार माँगा था" इस कविता में प्रस्तुत करते हुये कवयित्री कह उठी है।

"मैंने
प्यार माँगा था
तुम से ।"[20]

2·10 नश्वरता का एहसास :-

कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया ने नये युग में नयी कविता लिखते समय अपना काव्य संग्रह "हिरण्यगर्भा" प्रस्तुत करते वक्त अपने जीवन सम्बन्धी घटनाओं को काव्य का विषय बनाया है। कवयित्री का जीवन तालाब से बाहर होनेवाली मछली की तरह है। उस जीवन की कोई आशा नहीं हैं।

दिनेश नंदिनीजी के भावों में सरसता हैं। प्रियतम के मिलने के प्रति अटूट लगन हैं। वही एक अनुरक्ती और दार्शनिक विरक्ती का भाव भी सहसा झलक उठता है। कवयित्री अपने उद्‌गारों का मुल्यांकन अपने भावभूमी पर रूपायीत करने

करने के पश्चात ही करती है यही सत्य उनके काव्य में पुर्ण रूपसे खरा उतरा हैं। प्रिय द्वारा अवगुठन खोलने की प्रतीक्षा करती हुयी कवयित्री अपना सबकुछ प्रिय के ऊपर समर्पित करने के हेतु तत्पर है, उसी प्रियतम ने जब उसे छोड दिया तब उसे जीवन की नश्वरता का एहसास हुआ। कवयित्री के हृदय में एक अनिर्वचनीय करूणा पलती हुयी दृष्टिगत हो रही है। वह स्वयं को शयन की ऐसी आरती तथा भारती के रूप में निहारती है, जिसके प्रत्येक ऑसु में "रात" पिघलकर उसके जीवन से मिलती चली जा रही हैं। इसी कारण कवयित्री को अपना जीवन अन्धियारा लग रहा हैं।

कवयित्री का पीडा से आकुल मन जीवन में प्राप्त हुये बन्धन को ही श्रेयस्कर समझता है निरन्तर पीडा से क्रिया करते हुये वह सुखों को संचित करना नहीं चाहती यही नश्वरता का एहसास मालूम होता है।

"धूपबत्तीया से धुँधलाया तैलचित्र" कविता में भी कवयित्री ने नश्वरता का एहसास व्यक्त करते हुये कहा है, कि मेरे कमरे में एक ऐसा चित्र लटकाया गया हैं। वह चित्र मेरे जैसा ही है। वह चित्र मेरा न होकर भी बाकी सब लोग कहते है कि वह चित्र किसी और का नहीं तुम्हारा ही है। वह चित्र भी दुःख का शिकार हो गया था। उसमें भी न चमक थी, न दमक थी, जैसा कि मेरा जीवन। उस चित्र से हर एक व्यक्ति जैसे परेशान होता हैं। उस चित्र को देखकर किसी में भी जीने की इच्छा निर्माण नहीं होती जैसे कि मैं। मैं भी एक ऐसी दुःखी औरत हूँ, मुझ में भी जीने की बिल्कुल इच्छा नही है। मैने अपने इस जीवन के केंचुल को उतारना चाहा पर न उतार सकीं। मैंने हरसमय भविष्य को नकारने के कारण वर्तमान को जीवन के निकट न आने देने के कारण मेरा जीवन ऐसा बन गया है। कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया को किसी भी चीज के प्रती आकर्षण न होने के कारण उनका जीवन नश्वर बन गया है।

कवयित्री ने जीवन में अनेक दुःख भोगने के कारण उनके जीने की उम्मीद ही खत्म हो गयी है। नया जीवन अपनाने का प्रयत्न करने के बावजूद भी वह

अपना पुराना जीवन याने की दुःखमय जीवन न छोड सकी। इस नश्वरता के एहसास को व्यथा की वाणी में बाँधते हुये कवयित्री ने कहा हैं -

"दिवाली की रात
झाड पोंछ कर
नौकर ने इसे चमकाया
पर मैंने अपना केंचुल उतारना चाहकर भी
न उतारा किया
अब भी देखने वाले
उस चित्र को मेरा ही कहते हैं।"[21]

2·11 <u>पश्चाताप</u> :-

नये युग की कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया ने "हिरण्यगर्भा" इस काव्यसंग्रह में अपने करूण व्यथा को अनेक प्रकारों से स्पष्ट किया है। इसके साथ-साथ उन्होंने अपने कविताओं के माध्यम से प्रायश्चित को भी प्रस्तुत किया है। कवयित्री का प्रायश्चित प्रेम के बाद का प्रायश्चित है। कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमियाजी के रोने का भी अत्यन्त पावन ढंग है। किसी अप्राप्य वस्तु के लिये प्रायश्चित्य स्वरूप रोना तो एक साधारण बात है, परन्तु अधर्म की मादकता और आशा से उलझे हुये सपनों की श्यामलता को धोने के लिये तथा प्यार को प्राणोंसे तौलने के लिये अश्रुओं का प्रयोग अत्यनत माँगलिक और स्वस्त प्रयोग हैं।

मनुष्य जीवन में इच्छाओं का भार बढ़ता चलता है परन्तु यह जरूरी नहीं कि उसकी सभीं इच्छाएँ पुर्ण हों। वे निराशाओं में परिणत होती हैं, और धीरे-धीरे अज्ञात मन की धरोहर बनकर स्वप्न मे अभिव्यक्त होकर असीम पीडा की सृष्टि करती हैं। इसी प्रकार जब जीवन की आसक्तियाँ स्वयं मृत्यु से अठखेलियाँ करने लगती है और कब्र के फूलों से हार गुंधकर क्षणिक सुख में ही स्थायी सुख का अनुभव करती है, तब आत्मा के दर्द की तासीर का पता लगता हैं। और इसके माध्यम से ही पश्चाताप का स्वर निकल पडता है।

कवयित्री का पश्चाताप आकुल मन जीवन में प्राप्त हुये बन्धन को ही श्रेयस्कर समझती है। दिनेश नंदिनी के कुंठित प्यार की पीपासा अनेक रूपों में प्रकट हुयी पहले तो प्रियतम का आगमन ही नहीं होता। प्रतीक्षा करते-करते युग बीत जाते हैं। कवयित्री को ऐसा लगता है कि मैंने उसके साथ प्यार ही क्यों किया, उसका इन्तजार क्यों किया। किन्तु जब आगमन होता है तो उस समय कवयित्री के यौवन का मधुमांस बीत जाता है। शादी के बाद शादी ही कवयित्री की पीडा बन गयी थी। और यहीं पीडा पश्चाताप का स्वर लेती हैं।

"निशान्त होने की तरह" कविता में कवयित्री ने अपना पश्चाताप प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया। कवयित्री कहती है कि, इन्सान के जीवन का अन्त होता है और कोई दुसरा इस सृष्टि में प्रवेश करता है। जैसे कि सुरज डूबने के बाद अन्धियारा छा जाता है। और फिर अन्धियारा खत्म करने के लिए सुरज जनम लेता है। फिर एक बार नये जिंदगी की शुरूआत हो जाती है जैसे कि नये दिन की।

कवयित्री कहती है, कि तुमने मेरे जन्मों का गणित किया होगा मेरे कर्मो के साथ-साथ मैने जो पाप किया उसे मैं अपने पैरो के नीचे दबादबाकर आयी। मैं उसे नदी के दूसरे किनारें पर छोड आयी। उसके भी अंक जोडने का प्रयत्न तुमने किया होगा। मैं अपना पहला जीवन छोडने के बावजूद भी तुमने उसी वजह से मुझे तकलीफ दिया। मैंने नया जीवन शुरू ही क्यों किया। इस बात का कवयित्री को पश्चाताप हुआ।

आज का मेरा तुम्हारे साथ जो जीवन बन्धा है उस जीवन से भी तुम्हारे कारण ही ऊब गयी हूँ। आज मुझे हर एक जानता है इसी कारण मैं गलत कदम नहीं उठा सकती। अपने जीवन में कवयित्री को पश्चाताप कैसे हुआ इसके बारें मे लिखते हुए कवयित्री कहती हैं -

"तुमने -
मेरे जन्मों का गणित किया होगा
मेरे कर्मो का

प्रेम के अदृश्य रिश्तो का
पगथलियों के नीचे दबे
उन पापों का
जिन्हें मैं नदी के दूसरे किनारे पर
छोड आयी हूँ -
उनके अंक तुमनें जोडे होंगे।"[22]

2·12 <u>घुटन :-</u>

दिनेश नंदिनी डालमिया की परवशता तथा दुर्दशा "हिरण्यगर्भा" में व्यक्त हुयी है। उसमें उन्होंने अपनी घुटन को स्पष्ट किया।

कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया का जीवन घुटन से भरा हुआ है। हर समय वह अपना घुटनमय जीवन जीने का प्रयत्न करती है। आर्थिक हालात के कारण निर्माण होनेवाली घुटन, घर की बुरी अवस्था सम्हालते वक्त होनेवाली घुटन। उसके साथ संघर्ष करने के बावजूद भी घुटन कम न होने के कारण उनका उब जाना, प्रेम में अपयश आने के कारण प्रेमी की याद बार-बार सताने के कारण, प्रेमी को अपने दिल से अलग करने का प्रयत्न करने क बावजूद भी उसका अलग न होना। और वही पीडा के माध्यम से बार-बार सताना, शादी के बाद अपनी इच्छा के विरूध्द हर एक होनेवाली घटना किसी भी बात से आत्मसंतोष न मिलना, वैवाहित जीवन एक विडंबन बन जाना, कवयित्री की घुटन बन गयी है।

"दिनेश नंदिनी ने प्रणय की पीपासा को पीकर जैसे-तैसे अपने जीवित रहने की कहानी दुहरायी। वह अपने भौतिक शरीररूपी कारागर में अपने आत्मीक बन्धन से विव्हल हो उठती हैं। और वह स्वीकार करती है कि न जाने कितने जीवात्मा रूपी अतिथी विश्व वेदीपर अपने जीवन की स्मृति को तर्पण करने के लिए यहाँ आते है और फिर वापिस चले जाते है। कवयित्री का जीवन ऐसा है कि कवयित्री अपने आँखो की आँसू रूपी कोश को खोकर उन्हें सदा खाली ही पाती है। जीवन की कठोरता और विषमता का कवयित्री ने मानों पुर्ण अनुभव किया

है। अतः जिस प्रेमी को वह सत्य समझी थी उसी भाव का जब चांदी के टुकडों द्वारा विनिमय देखती है, तो उसका हृदय चीख उठता है।"[23]

कवयित्री दिनेश नंदिनी के भावों का प्रस्फुटन प्रकृति को साथ लेकर यदि कहीं हुआ है, तो वहा मनस्थितीयों का साम्य देखा जाता है। अतः अन्धकार का कम्पन उसे कहीं तो प्रलय के उच्छवासों, कहीं मौन की मधुमय तानों कही सांध्य जीवन की बेला, कहीं नियति के कलरव जैसा प्रतीत होता है। इसी प्रकार वह उस कंपन को कभी लजीली शबनम, कभी किसी मुकूल के आवृत्त मुख, तो कभी शैशव उर में स्पन्दन जैसा। इत्यादी भिन्न-भिन्न स्थितियों में देखती हैं। प्रिय की प्रणय अग्नी में जलकर प्रियतम की आराधना करना तो उसे अभीष्ट है। और यही उसकी घुटन बन जाती है।

प्रतीक्षा के कारण निर्माण होने वाली घुटन प्रस्तुत करने के लिये, कवयित्री ने "खुशबू की फूहारें" कविता का आधार लिया। कवयित्री जब अपने प्रिय का इन्तजार करने के बाद थक जाती है, तब उसने अपनी झमझमाती बाहों को कॉट दिया हैं। और जिन नयनों से बार-बार आँसु बहते हैं। उस आँसुओं को उसने अनेक दिशाओं में बॉट दिया है। कवयित्री आगे यह कहना चाहती है कि आजतक मैंने तुम्हारा इन्तजार किया मगर तुम्हारे इन्तजार के लिए जो पल रूके हैं उसे आज मै छॉटना चाहती हूँ। और उस क्षणों को भी जहर बुझी विर की कटार से काटना चाहती हूँ। मगर कवयित्री के सामने यह सवाल है कि मैं इस शृंगार का क्या करू? मगर आज मैं वह तरीका भी भूल गयी हूँ। मेरे हाथों पर मेंहदी थी, मेरा बिस्तर फुल से सजाया गया था, और "खुशबु के फुहारे" उड रहे थे, और मै तुम्हारा इन्तजार कर रही थी। तुम न आये तो मेरे दिलपर क्या गुजरा? मैं चार दिवारी में बन्ध हूँ। मेरी दिल की अवस्था और किसी ने नहीं सूनी, मगर मेरे दिल की अवस्था को चार दिवारी के पत्थरों ने जाना हैं। बहुत इन्तजार करने के बाद, मेरे ऑखों से आँसु बहने के बाद, आधी रात बीत जाने के बाद तुम तो आये, मगर तुम्हारा आना न आने के समान था, बेकार था। क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जल रही थी, और तुम बुझकर आये थे।

दिनेश नंदिनी डालमिया ने अपनी घुटन को व्यक्त करते हुये कहाहै, कि आज तो मेरे प्रतीक्षा के पैर भी कॉट गये हैं। आज मैं न किसी की प्रतीक्षा कर सकती हूँ, न किसी का इन्तजार। अपने ही आग में जलना मैंने स्वीकार किया हैं। अब मेरा जीवन एक घुटन बनकर रह गया हैं। इस घुटनमय जीवन को व्यक्त करते हुये "खुशबू की फूहारे" कविता में कवयित्री ने लिखा हैं -

"अब तो प्रतीक्षा के
पैर भी कट गये
झुलस गयीं -
उसकी कच्ची-पक्की कसमें - साधें
अंतर के ऑगन पर
उकेरी औसानियाँ -
तुम्हारे आने की उम्मीदें ही
पुछ गयीं ....."[24]

2·13 <u>प्रेमाकांक्षा</u> :-

नये युग कि कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने प्रणय परक भावों का चित्रण एक निश्चल, अभिव्यक्ति के साथ किया हैं। वैसे तो नारी स्वयं ही प्रेम की एक प्रतिमा है, इसलिए परिस्थिति विशेष में जब वह प्रेम के गीत गाने बैठती है, तो उसके भाव नैसर्गिक रूप से सहज ही प्रकट हो जाते हैं। प्रतीक्षा करते हुए दिन बीत जाता है, रात का आगमन होता है, किन्तु प्रिय नहीं आता। संसार का दिनभर का मेला भी समाप्त होगया हैं। प्रेमिका का मन पंछी बार-बार प्रिय के विचारों में लीन हैं।

प्रिय की प्रतीक्षा करते हुए जब बहुत सा समय व्यतीत हो जाता है, तो प्रेयसी की व्यथा और भी गहन हो उठती है। लेकिन इतने आग्रह और प्रतीक्षा के बाद भी जब उनकी प्रेमाकांक्षा पूरी नहीं होती तब वे निराश हो जाती हैं। और इसी प्रकार श्रीमती डालमियाजी के प्रेम कविता में संवेदनाओं की सच्चाई, भावों की सजीवता, अनुभूतियों का आवेग बडे गम्भीरता से दिखायी देता हैं।

कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने अपनी प्रेमाकांक्षा "प्रतीक्षा में पनिहारिन" इस कविता के द्वारा व्यक्त की है। कवयित्री को हमेशा अपने प्रिय के आने की इच्छा रहती है उनकी "प्रतीक्षा में पनिहारीन" कविता पढने से ऐसा प्रतीत होता है कि वह जहाँ जाती है, उधर अपने प्रिय को पाने की इच्छा रखती है, किसी भी वस्तु में उसे अपना प्रियतम दिखायी देता है। वह हमेशा किसी भी वस्तु के साथ अपने प्रियतम की तुलना करती है।

इस कविता में कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने तालाब के किनारें बैठकर अपने प्रिय की प्रतिक्षा की है। कवयित्री कहती हैं कि मैं मेरे प्रियतम के प्रतीक्षा में अपने पाँव पानी में लटकाकर बैठी हूँ, और उधर मछलियाँ किसी भ्रम में मेरे पाँव को बार-बार टकरा रही है। वैसी ही तुलना कवयित्रीजी ने अपने मिट्टी के घडे के साथ की हैं।

कवयित्री कहती है कि तालाब के किनारें पर जो मैंने मिट्टी का घडा रखा है वह भी मेरे साथ पानी में झिलमिला रहा है। मानों मेरी परछाई और उस घडे की परछाइं डूबते हुये सूरज की साक्षी लेकर परस्पर किसी प्रतीक्षा में उलझी दिखायी देती हैं। इस तरह "प्रतीक्षा में पनिहारिन" कविता में कवयित्री ने आकाश की सूनी नीलिमा की ओर देखते हुए की हैं -

"तालाब के तीर पर
मेरा भरा रखा घड़ा
पानी मे झिल मिला रहा है मेरे साथ
डूबतें सूरज की साक्षी में
लंबी होती परछाइंया परस्पर उलझ रहीं हैं
किसी भ्रम में।

और मैं
आकाश की सूनी हिलती नीलिमा में देखती
किसी आगंतुक की प्रतीक्षा में हूँ।"[25]

2·14 <u>अस्तित्व विषय प्रश्न :-</u>

मनुष्य पूर्णतः विवश और यत्नहीन हो जाता है, तभी उसके जीवन में वास्तविक आस्तित्व का बोध प्रारम्भ होता है। और इस निरूपायता को नष्ट करने के लिए अस्तित्ववाद मानीवय स्वतन्त्रता का प्रबल समर्थन करता है।

नये युग की नयी कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमियाने "हिरण्यगर्भा" इस काव्यसंग्रह में अस्तित्व विषयक प्रश्न को लेकर काव्य प्रस्तुत किये है। जब दिनेश नंदिनी पुर्णतः जीवन में विवश हो जाती है, तब उनके जीवन में अस्तित्व का बोझ प्रारंभ होता है। और उसे नष्ट करने के लिये अस्तित्व विषयक प्रश्न को कवयित्री ने अपने काव्य में स्थान दिया।

दिनेश नंदिनी डालमिया के अनुसार उन्होंने अस्तित्व विषयक जो काव्य निर्माण किया हैं, वह भाव तथा विचार के प्रती जीवन का विद्रोह हैं। मृत्यु कब आ जाय इसका भी तो कोई ठिकाना नहीं, अत एवं जीवन के प्रत्येक क्षण को चरम मानकर उसका आस्वादन करना उसका संलक्ष्यक हो जाता है। प्रकृत शैली का अनुसरन करने के कारण दिनेश नंदिनी डालमिया ने अपने साहित्य में मौन सम्बन्धों का खुला चित्रण किया है। दिनेश नंदिनी की शैली यथार्थवादी हैं।

दिनेश नंदिनी डालमिया अपने घर के चार दिवारी का जो जीवन है, उस जीवन से तंग आ गयी थी। इस चार दिवारी के घुटन से मुक्ती पाने का प्रयास हर समय करती थी। मैं भी एक इन्सान हूँ संसार में मेरा भी कुछ अस्तित्व है, ऐसी भावना जब कवयित्री के मन में निर्माण होती है, तब उनका काव्य प्रस्तुत होता हैं।

"प्रतीक्षातुर ठिठकी लहर" कविता में कवयित्री ने अपने अस्तीत्व विषयक प्रश्न को उठाया। इस कविता में वह कहती हैं - कि मैं एक ऐसी औरत हूँ, कि मेरी जात का भी पता नहीं, और न मेरा कोई नाम है। मेरी कोई जात न होने का मेरा कोई नाम न होने का सिर्फ तू जिम्मेदार हैं। तेरे कारण मुझे ऐसा लग रहा हैं कि यहा मेरा हाथ पकडनेवाला भी कोई नही हैं और यह देश भी मेरा

नही हैं। इसी वजह से जब मेरा स्वयं का प्रश्न निर्माण हो जाता है। तब मुझे ऐसा लगता है कि मैं बावली हो गयी हूँ अन्धी हो गयी हूँ। मेरे जीवन में घना अन्धकार छा गया है। जब तूम मिंले तो तुम्हारा मिलना भी ऐसा महसूस हो रहा है कि मुझे किसी प्रेम ने जकड लिया है। और अपनी जकडन से मेरा मन, मेरा बल, ओर आत्मा तोडने का कार्य कर रहा हैं। जब मैंने अपने आपको अपने में ही खोजने का ढूँढने का प्रयास किया कि मैं कहा हूँ ? जो प्रेम बाधित वृक्ष के नीचे खडी है, और किसी का इन्तजार कर रही हैं।

इस कविता के माध्यम से कवयित्री के मन में स्वयं के अस्तित्व का प्रश्न जाग उठा। और वह अपने आप की खोज कर रही हैं। तब वह कह उठी हैं-

"तुम्हारा अभियोग
प्रेत बन कर कस रहा है अपनी जकडन
तोड रहा है मेरा मन, बल, आत्मा
ओर मैं कही अपने, भीतर
अपने को खोजती-ढूँढती
कि मैं कौन हूँ -
प्रेत बाधीत वृक्ष के नीचे की
सुनसान बावडी
बावडी का परित्यक्त जल
जल की प्रतीक्षातुर ठिठकी कोई लहर ?"[26]

2·15 <u>चिंतनान्मक कविताएँ :-</u>

"चिन्तन" कविता का आत्मा होती हैं। कवयित्री ने प्रेम, जीवन, परमात्मा शक्ती आदि विविध विषयों पर चिन्तनात्मक कविताएँ प्रस्तुत कि है। कवयित्री ने खुद चिन्तन करके, विचार करके कविताओं को निर्माण किया है। नये युग की नयी कवयित्री होने के कारण दिनेश नंदिनी डालमिया ने अपने काव्यसंग्रह में गहराई के साथ अपनी चिंतनात्मकता को व्यक्त किया है। उनकी कविताओं को पढ़कर पाठक भी चिन्तन किये बना नहीं रहता।

प्रेमचिंतन :-

प्रेमविषयक चिंतनात्मक कविताएँ प्रस्तुत करते हुए कवयित्री ने जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है। "प्यार बनाम अपराध" कविता में कवयित्री ने इसी विषय को उठाया। कवयित्री कहती है कि, प्यार जब कोई गलत कहानी का शिकार होता है, तो वह प्यार न रहकर अपराध बन जाता है। प्यार अपराध क्यो और कैसे बनता है इसका विस्तृत से विवेचन करते हुए कवयित्री ने कहा है कि अगर हमने अपने प्रेमी पर संदेह किया तो समझलो हमारे प्यार में खुद हमने ही दिवार खडी कर दी और वह शक हमारे हृदय को आर-पार चिरता हैं। अगर हमने स्वयं ही टेढी मेढी इबारते शंका में लिखने का प्रयास किया तो संघर्ष अटल होता हैं। जब हम किसी औरत को सौतन समझकर उससे इर्ष्या करने लगते है तो हमारा दिन और रात दोनो भी चैन से नहीं गुजरतें। और इसी कारण हम अपने को अपने से दूर कर देते हैं। एक बार जब रिश्ते टूट जाते हैं तो फिर उसे जोडने का कोई मुल्य नहीं रहता। इसी वजह से जो प्यार था वह अपराध बन जाता हैं -

जैसे -

"प्यार कहीं जब
अपराध पालता हैं -
संदेह पर संदेह गढता
अपने हाथों
दीवारें खडी करता
भाले-सा-आर-पार सलता है।"[27]

यथार्थ प्रेमपर चिन्तन करते हुये कवयित्री को जीवन का रहस्य समझ गया हैं। इस जीवन के रहस्य को प्रेम चिंतनात्मक काव्य के माध्यम से व्यक्त करते हुये, कवयित्री ने "प्रेम पक्षी" कविता का आधार लिया हैं। प्रेमपक्षी कविता में कवयित्री ने जीवन के यथार्थ सत्य को प्रस्तुत किया है - आगर की दिशा से आकर निगम की दिशा में जानेवाला पक्षी प्रेम हैं, जिसके कारण व्यक्ति के जीवन में आशा

का संचार होता है। और वह प्रेम पक्षी अपने जीवन की यात्रा करते हुये वह उस व्यक्ति के साथ प्रेम करता है, या करना चाहता है, जो उस पर सिर्फ प्रेम ही करें वह उस व्यक्ति का साथ देना चाहता हैं। जो भीतर की आग से रहीत हो और जिसने वासना पर विजय पायी है। प्रेम में वासना का कोई महत्व नहीं है। यह व्यक्त करते हुए कवयित्री कह उठी हैं -

"अपनी अनंत यात्रा पथ में वह
उसी व्यक्ति के हाथों
दाना-पानी लेता है
जो भीतर की आग
और मांसल प्रलोभनों पर
विजय-ध्वज सा लहराता है।"[28]

परमात्मा विषयक चिन्तन :-

कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया की कविताओं में प्रेमचिन्तन के साथ-साथ ईश्वर या परमात्मा विषयक चिन्तन भी दिखायी देता है। कवयित्री ने मनुष्य के रहस्य को खोलने का प्रयास किया। ईश्वर विषयक चिन्तन करते हुये "सत्य" कविता में कवयित्री दिनेश नंदिनीजी ने कहा हैं -

आज का मनुष्य बडा स्वार्थी बन गया है। अपने गुनाह को छिपाने के लिये उसने ईश्वर को भी नहीं छोडा। कवयित्री कहती हैं आज का मनुष्य स्वार्थ के कारण अन्धा हो गया है, अपने अन्धेपन को छिपाने के लिए उसने ईश्वर का सहारा लिया। अपना स्वार्थ पूरा करने के लिये उन्होंने ईश्वर की मुर्ति को उठाया और मन्दिर में रख दिया। परमात्मा विषय चिन्तन करते वक्त कवयित्री को जीवन की यथार्थता का दर्शन हुआ हैं, उसे व्यक्त करते हुये कवयित्री कह उठीं -

"मनुष्य ने
अपने अंधेपन को
छिपाने के लिए
सत्य के पूरें चेहरे को
आंशिक संत्यो से ढँक दिया"[29]

"नर-नारायण" इस कविता में भी कवयित्री ने परमात्मा विषयक चिन्तन प्रस्तुत किया। कवयित्री कहती है कि आज तक मेरा जीवन पुरूष के हाथ में था, उनके अधिकार के कारण मैंने उनका कभी विरोध नहीं किया। आज मेरी अवस्था ऐसी हो गयी है कि पुरूष के अधिकार को बार-बार सुनतें में निशब्द हो गयी हूँ। इससे मैं मुक्ती चाहती हूँ। इसी वजह से मैंने ईश्वर की प्रार्थना की ईश्वर ने तो मेरी मदत नहीं की मगर उसका नाम लेते-लेते आज मैं निस्तब्ध और अवाक बन गयी। आज मुझ में जीने की चाह नहीं है, शायद इस मायारूपी संसार को छोडकर मैं ईश्वर के पास जा रही। कवयित्री "नर और नारायण" दोनों से मायुस हो गयी है। इसी वजह से उसने कहा हैं। -

"नर को
सुनते-सुनते मैं
निःशब्द हो गयी हूँ
और नारायण कहते - कहते
निस्तब्ध
अवाक् "[30]

<u>जीवन विषयक चिन्तन</u> :-

आधुनिक युग की कवयित्री होकर भी दिनेश नंदिनी डालमिया भावुक एवं संवेदनशील कवयित्री है। उसने जीवन को नजदिक से देखा हैं, प्रेम में असफल होनेवाली कवयित्री अपने वैवाहिक जीवन में भी असफल हो रही थी तब उसे यह जीवन खेल नजर आता हैं। "जीवन-खेल" कविता में कवयित्री ने जीवन विषय चिन्तन को वाणी दी है।

कवयित्रीजी का कहना है कि मेंने यह जो शतरंज का खेल बिछाया है, वह मेरे मानस का विस्तार है। मैंने ही शायद मेरी इच्छानुसार किसी मोहरे का संचालन किया है। और जब उसका काम हो गया तो उसे पिटारी में बन्ध्द करने का भी प्रयत्न किया। आज का जीवन वैसा ही बन गया है कि जब कोई किसी को चाहता नहीं तो गले लगाने का प्रयत्न करता है। और जब उसका हृदय भर

जाता हैं, तो उसे दूर हटाने का प्रयत्न किया जाता है। मेरा जीवन वैसा ही हैं। मैंने अपनी इच्छा के अनुसार मेरे सिध्दान्त संकल्पों के अनुसार मोहरों का संचारण किया था। और जब उसका खेल खत्म हुआ तब उसे छोडकर मैं दूसरों के द्वारपर आयी। इसी कारण ही शायद मेरा जीवन खेल बन बया। यह प्रस्तुत करते वक्त कवयित्री ने कहा हैं -

"मेरी ही सिध्द-संकल्प शक्ति
मुहरों का संचालन करती

ओर खेल के खत्म होने पर
मैं ही इन्हें गिन-गिन कर
अपनी भानुमती की पिटारी में भर लेती हूँ।"[31]

<u>शक्ति विषयक चिन्तन :-</u>

नये युग की नयी कवयित्री दिनेश नंदिनी डालमिया ने प्रेमचिन्तन, परमात्मा चिन्तन, जीवन विषयक चिन्तन आदि के साथ-साथ शक्ति विषयक चिन्तन भी प्रस्तुत किया है। काल की शक्ति को कोई जान नहीं सकता इसे जानने का प्रयत्न चिन्तन के माध्यम से कवयित्री ने किया है। काल, गति और शक्ति विषयक चिन्तन को प्रस्तुत करने के लिये "समय तक्षक है" इस कविता का आधार कवयित्री ने लिया। कवयित्री कहती है - हरसमय समय की शक्ति हा एहसास किसी को नहीं है समय में हर एक पर राज किया मगर मेरे जीवन का जो समय है वह तक्षक समय है। हरसमय वह मुझे पीडा देने का कार्य करता है। इस तक्षक रूपी समय के बारे में कवयित्री ने कहा है कि परिक्षित ने जब फुल सूँगने का प्रयत्न किया तो वहाँ पंखुरियों के बीच कीट के रूप में तक्षक छिपा हुआ था और उस तक्षक ने अपने अदृश्य हाथों से साँसों की कोमलता को समेट लिया। इसी वजह से व्यक्ति के जीवन में पीडा निर्माण होती है। उसे काल की शक्ति का एहसास नहीं होता तब उनके वाणी से काटों की तरह शब्द बिखर जाते हैं और कवयित्री की वाणी रस्सी की तरह ऐंठ जाती हैं।

इस कालरूपी तक्षक ने कवयित्री की वाणी को डँसने का उसे पीडा देने का प्रयत्न किया है। जो काव्य इतिहास बन गया है वह इस कवयित्री की पीडा को वेदना को देखकर ठंठाकर हँसता है। हरसमय कवयित्री के जीवन में समय तक्षक बनकर आया है और कवयित्री को पीडा दी है। इस काल की शक्तिपर चिन्तन करते हुए कवयित्री ने लिखा है -

"जब भी तक्षक वाणी को डँसता है
घाटियों में इतिहास
ठठा कर हँसता है।"[32]

आत्मचिंतनात्मक कविताएँ :-

छायावादी कवि अपने भाव जगत का चित्रण करते-करते अन्तर्मुखी हो जाता है। उसकी अन्तचेतना अन्दर ही प्रिय-मिलन का अनुभव करने लगती है। अतः दुःख का स्वरूप सुख-रूप में परिणत होकर झिलमिलाने लगता है। दिनेश नंदिनी ने इस प्रकार के भावों को अनेक रूपों मे प्रस्तुत किया है।

दिनेश नंदिनी प्रमुखता प्रणय परक भावना की कवयित्री हैं, किन्तु उनकी कल्पना लौकिक धरातल से चलकर अध्यात्मिक भूमिका सहज ही स्पर्श कर लेती है, जो छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। महादेवी के समान उन्होंने भी दुःख को अपने जीवन का साथी स्वीकार किया है तथा सुख से दूर हटकर दुःख में ही विचरण करना उन्हें अधिक भांता है। उनके काव्य में एक ओर तो दार्शनिक प्रवृत्ति का सहज आगमन है, तथा दूसरी ओर सहज अभिव्यक्ति के साथ सूक्ष्म-दृष्टि से सम्पन्न चित्रात्मकता की प्रवृत्ति देखने को अनायास ही मिल जाती है। एक विशेष बात यह भी है कि कवयित्री ने अपने सहज भावना के अनुरूप भिन्न-भिन्न भावपरक चित्र अवश्य प्रस्तुत किया हैं, किन्तु भाषा की सहजता और सरलता एवं स्वाभाविक रूप से आये हुए मानवीकरण का आगमन उनके काव्य को कृत्रिमता से हटाकर स्वाभाविकता के धरातल पर प्रतिष्ठित कर देता है।

प्रेम, जीवन, परमात्मा, शक्ति आदि के साथ-साथ दिनेश नंदिनी जी ने आत्मचिन्तनात्मक कविताएं भी लिखी है। आत्मचिन्तनात्मक कविताओं के माध्यम

से उन्होंने हृदय की व्यथा को वाणी दी है।

"पल्लू में लगी आँच" कविता में कवयित्री ने आत्मचिंतन करते हुये, यह कहा है कि ये सुर्यमुखी तू अपना ध्यान किस तरफ दे रहीं है। आज तुम्हारा ध्यान कहीं भी नहीं लग रहा हैं, तुम इस जगती पर कौन सी साधना कर रही हों, जिस में तू इतनी रत हो गयी हैं। इस धरतीपर इतनी साधना करने का क्या मतलब हैं। यहाँ तुझे क्या मिलनेवाला हैं। यहाँ तो अखण्डित शान्ति हैं। यहाँ के लोग किसी की आवाज नहीं सुनते, और यहाँ व्यक्ति को मृत्यु के बाद ही छुटकारा मिल सकता हैं। हे सुर्यमुखी तुमने जिसे अपना लक्ष्य बनाया है, उसकी साधना करना छोड दो ओर पहले तुम्हारे जीवन में जो अन्धकार फैला है उसको दूर करने का प्रयत्न करों, याने की तुम्हारी पल्लू में लगी आँच पहले बुझा दो कवयित्री ने "पल्लू में लगी आँच" इस कविता के माध्यम से आत्मचिन्तनात्मक कविता का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस कविता में कवयित्री ने कहा हैं -

"सुर्यमुखी
करती हो साधना कैसी
त्राटक की ।

किंतु पहले
पल्लू में लगी आँच तो बुझा लो।"[33]

"परछाइयों का शहर" कविता का आधार लेकर कवयित्री ने इसमें भी आत्मचिंतनात्मकता का और एक अच्छा उदाहरण पेश किया है।

इस कविता में कवयित्री ने अपने अतीत और वर्तमान जीवन के बारे में यथार्थता के साथ अपना नीजी जीवन प्रस्तुत किया हैं। इस कविता में कवयित्री कहती है कि मैं आज जो जीवन जी रही हूँ, वह जैसे एक "परछाइयों का शहर" है। मुझे ऐसा लगता हैं कि मुझे यहाँ किसी ने यहां के सीमापर चूपचाप छोडा हैं। तब मेरे सामने मेरे पहले जीवन का और आज के जीवन का चित्र घुमने लगा। इन चित्रों को देखकर मैं चक्री सी घूमती रहीं। इस परछाईयों के शहर में किसी

अदृश्य शरीर ने मुझे अपनाया। इसी वजह से मेरी सब सौगन्धे टूट गयी, जो मैंने अतीत में ली थी। मैं किसी अज्ञान शरीर का शरीर शिकार होने के कारण मेरा जीवन पीला पड गया। और उस अज्ञात शरीर ने मेरे अतीत के जीवन को नये तरीकें से धोने का प्रयत्न किया। तब मुझे ऐसा महसुस हुआ है कि यह मेरा जो परछाईंयों का शहर है जो मेरी तरह स्थिर और उदास है। वह भी आगें सरकने लगा परन्तु मैं उसी सीमा पर, जिन्होंने मुझे छोडा था वहां पर कही छूट गयी। मेरा पहला जीवन अलग प्रकार का था, उस में धन, दौलत तो नही था, मगर आत्मसन्तोष था। मेरा जो पहला जीवन था वह आज बदल गया हैं। मैं इस जीवन से मुक्त कब हुयी हूँ, मैने राग से, पराग से, खुशबुं से, छन्द से, जीवन से मौत से नाता कब तोडा। और मैं मुक्त कब हुयी इसका मुझें पता ही नही चला। मेरा जीवन, और मौत जैसे एक ही बन गयें। और मुझे यहाँ पहुँचाया गया। यह व्यक्त करते हुये कवयित्री कहती हैं -

> "वह परछाईंयों का शहर था।
> जहाज मुझे छोडा आया
> उसकी सीमा पर,
> चुपचाप .....।"[34]

निष्कर्ष :-

श्रीमती दिनेश नंदिनीजी की कविताएं लौकिक दृष्टि से तो सामायिक नहीं है, मगर उनमें काव्य के शाश्वत गुण अवश्य विद्यमान हैं। आंतरिक प्रेरणा और अनुभूति से ओतप्रोत उनके गीत अत्यन्त हृदयस्पर्शी और मार्मिक है। वे निश्चय ही सामायिकता के झमेलें में नही पडी है, परन्तु उन्होंने विरह, मिलन, प्रेम, अर्चन, बन्दन, समर्पण आदि मानव की शाश्वत अनुभूतियों को सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। दिनेश नंदिनी के भावों में सरसता है, प्रियतम के मिलन के प्रति कही अटूट लगन हैं, किन्तु वहीं एक अनुरक्ति और दार्शनिक विरक्ति का भाव उनके काव्यों में दिखायी देता हैं।

साहित्यकार अपने उद्‌गारों का मूल्यांकन, उन्हें अपनी भाव-भूमि पर रूपायित करने के पश्चात ही करता है, यही सत्य दिनेश नंदिनी के काव्य में पूर्ण रूप से खरा उतरा हैं। प्रिय द्वारा अवगुण्ठन खोलने की प्रतीक्षा करती हुई कवयित्री अपना सब कुछ प्रिय के ऊपर समर्पित करने के हेतु तत्पर है। अतः वह हमेशा प्रियतम की चिन्तन में दिखायी देती हैं।

कवयित्री का पीडा से आकुल मन जीवन में प्राप्त हुए बन्धन को ही श्रेयस्कर समझता है। निरन्तर पीडा से क्रीडा करते हुए वह सुखों को संचित करना नहीं चाहती। उन्हें अपनी बन्दी आहों से इतना मोह है कि सुख के सम्पूर्ण द्वारों को बन्द करने हेतु वह अपना स्वर मुखरित करती है। और इसी पीडा को, कठिनाइयों को जीवन में सहते-सहते कवयित्री के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह के काव्यों में पीडात्मक विषय पढ़ने को मिलते है। उन्होंने अपने कविताओं में आत्मपीडा, विवशता, अतृप्तता, विरह वेदना, पश्चाताप, अपेक्षाभंग, विफल प्रेम, घुटन, बंधमुक्ती का प्रयास, चिन्तन, वैवाहिक जीवन की विडंबना, समर्पण से सृजन आदि विषयों को प्रस्तुत किया हैं।

दिनेश नंदिनी ने प्रणय की पीपासा को लेकर जैसे-तैसे अपने जीवित रहने की कहानी दुहराई है। वह अपने भौतिक शरीर रूपी कारागार में अपने आत्मिक बन्धन से विव्हल हो उठती है। जीवन की कठोरता और विषमता का कवयित्री ने मानों पूर्ण अनुभव किया है।

कवयित्री के हृदय में एक अनिर्वचनीय करूणा पलती हुयी दृष्टिगोचर हो रही है। वह स्वयं को शयन की ऐसी आरती तथा भारती के रूप में निहारती है, जिसके प्रत्येक आँसू "रात" पिघल कर उसके जीवन से मिलती चली जा रही हैं।

प्रियमिलन के क्षणो में अनुभूति में कवयित्री की मूख पीडा ही मुखरित हुयी है। वहाँ एक ऐसी कसक है, जो अनिर्वचनीय हैं, किन्तु उसमें भी मीठास है। पुरानी पीढी की कवयित्री होने के नाते जीवनमूल्यों पर उनकी आस्था कम

नहीं हुई है, न उनके काव्य पर से परम्परागत पकड ही ढीली हुई है। पर परम्परा का नाम तो प्रवाह है। उनकी यह परम्परा भी प्रगति-उन्मुख है। समय का सत्य उसके साथ-साथ चलता है - "परिवेशगत आईनों की आंखों में कंाप रही है बहुमुखी शंकाएं।" लेकिन कवयित्री अपने अतीत के मोहपाश से मुक्त नहीं हो पाती। "पर मैं उन हथेलियों का क्या करूं , जिन पर तुम्हारे चुंबनों के पलाश खिले, शिवाओं तक पहुंचे, गंध बन खिले, उन्हें कहां टांकू? आंखों में मचलती अलखनंदा को किस चट्टान पर उतारूं?"

"अक्षांश रेखा"······"आंचल के दूध से धुला पथ", "रातभर", ··· "प्राणों को दिए सा सजाए", ··· "खंडहरों में गूंजती हवा", ···· "विषाद गीत", ·· "परछाइयों का शहर" आदि अधिकांश कविताओं में वही गूंज-अनुगूंज है, वही परछाइया। दर्शन और अध्यात्म के आवरण में वही याचक-मुद्रा, वही मांसलता और वही भावुकता। इसी तरह दिनेश नंदिनी डालमिया की रचनाओं में छायावादी भावों का एक सहज प्रवाह हैं। इसका परामर्श एवं मुल्यांकन करने का मैंने प्रयास किया हैं।

संदर्भ सूची

1· हिरण्यगर्भा, श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया, पृ·, 10

2· वही, पृ·, 13

3· वही, पृ·, 13

4· वही, पृ·, 14

5· वही, पृ·, 12

6· वही, पृ·, 36

7· वही, पृ·, 41

8· वही, पृ·, 75

9· वही, पृ·, 15

10· वही, पृ·, 56

11· वही, पृ·, 32

12· वही, पृ·, 34

13· वही, पृ·, 3

14· वही, पृ·, 47

15· वही, पृ·, 63

16· वही, पृ·, 44

17· वही, पृ·, 52

18· वही, पृ·, 42

19· वही, पृ·, 49

20· वही, पृ·, 74

21· वही, पृ·, 40

22· वही, पृ·, 78

23· आधुनिक कवि और उनका काव्य , डॉ·दयानन्द शर्मा , पृ·, 169

24· वही, पृ·, 70

25· हिरण्यगर्भा , श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया, पृ·, 45

26· वही, पृ·, 54

27· वही, पृ·, 21

28· वही, पृ·, 66

29· वही, पृ·, 68

30· वही, पृ·, 72

31· वही, पृ·, 67

32· वही, पृ·, 71

33· वही, पृ·, 18

34· वही, पृ·, 37